

आपका घर की सफलता के बाद सरकार अब आपके घर का लंबा-चौड़ा पता सिर्फ 6 अंकों में समेट सकती है. मैप माई इंडिया के साथ भारत सरकार का दूरसंचार विभाग एक पाइलट प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है. एक बार आपके मकान का डिजिटल एड्रेस फाइनल हो जाएगा तो किसी को भी आपका पता पढ़ने के लिए भटकने की जरूरत नहीं पड़ेगी.

मकान का डिजिटल एड्रेस

अब 6 अंकों में घर का पता



आपके घर की लोकेशन के आधार पर एक डिजिटल कोड जनरेट किया जाएगा. 6 डिजिट का यह कोड अल्ट्रा न्यूमेरिक होगा, यानी यह अंकों और अल्फाबेट का मिलाजुला रूप होगा जैसे- 1A33CB. इसमें आपके मकान की लोकेशन, गली, मोहल्ला, जिला, राज्य और देश सबकुछ मैप पर टैग रहेगा. मैप पर यह अंक डालते ही आपके घर या गंतव्य का पता मैप पर लोकेट हो जाएगा. ई-लॉक यूनीक होगा और इसमें फ्लैट, मकान और कैम्पस की डिटेल् भी टैग होगी. यह एक प्रकार से आपके घर का आधार नंबर होगा, जो यूनीक होगा.

कैसे होगा फायदा

इससे फायर सर्विस, डाक विभाग, ई-कॉमर्स वेबसाइटों को फायदा होगा. इससे फोल्ड ऑपरेशन आसान हो जाएगा. गांव और दूरदराज के इलाकों में पहुंच आसान होगी. लॉजिस्टिक्स और ट्रांसपोर्टेशन के माध्यम से सामान दिए हुए गंतव्य तक पहुंचाना आसान हो जाएगा. इतना ही नहीं, इससे पर्यटकों और टूर पर जाने वाले लोगों को भी बहुत फायदा होगा. इससे यात्रियों को भी लाभ मिलेगा.

कैसे सर्च करेंगे ई-लॉक

डिजिटल एड्रेस भविष्य में पोस्टल एड्रेस का विकल्प होगा. एक बार नंबर जारी होने के बाद, मैप माई इंडिया ने ई-लॉक सर्च ऑप्शन दिया है, उसकी वेबसाइट पर जाकर ई-लॉक के 6 डिजिट नंबर डालकर एंटर बटन दबाने पर एक लिंक आ जाएगा. एक बार लोकेशन ट्रैक होने के बाद वहां तक पहुंच आसान हो जाएगा.



IRCTC ने शुरू की विकल्प स्कीम अब रेलवे में कम्फर्म सीट

रेलवे की एक बेहतरीन सुविधा, जिसके बारे में बहुत से पैसंजर्स अभी अज्ञान हैं. ट्रेन में कंफर्म बर्थ को लेकर बहुत टेंशन लेने की जरूरत अब नहीं है. उदाहरण के तौर पर यदि आपको शिवांगी एक्सप्रेस में दिल्ली तक का टिकट नहीं मिल रहा है तो बाकि नई दिल्ली जाने वाली अन्य ट्रेनों में आपका रिजर्वेशन ऑटोमैटिक कंफर्म हो जाएगा. हालांकि इसके लिए आपको रिजर्वेशन के दौरान 'विकल्प' सिलेक्ट करना होगा. रिजर्वेशन में विकल्प स्कीम के तहत रेलवे ने यात्रियों को बड़ी राहत दी है.

सुविधा का लाभ सभी रूट्स पर

रेलवे की इस सुविधा का लाभ पैसंजर्स सभी रूट्स पर उठा सकते हैं. विकल्प सुविधा के तहत अगर आपको मनचाही ट्रेन में टिकट नहीं मिली, तो आपको अन्य ट्रेनों का विकल्प दिया जाएगा. आईआरसीटीसी की वेबसाइट और रिजर्वेशन काउंटर से टिकट बुक करते समय स्क्रीन के राइट साइड में विकल्प शो कर रहा है, उस पर क्लिक करते ही संबंधित रूट की सभी ट्रेन्स की डिटेल् शो करने लगती हैं. जिसमें भी सीट अवैलेबल होगा, उसमें सीट अपने आप कंफर्म हो जाएगी.

फायदा

रेलवे की विकल्प स्कीम से वैलिंग टिकट वाले यात्रियों को खुद से दूसरी ट्रेन में खाली सीट मिल जाएगी. उन्हें दूसरी ट्रेनों में सीट की उपलब्धता के अनुसार कंफर्म बर्थ मिल जाएगा. यह विकल्प सुविधा हर रूट पर शुरू हो गई है. इस स्कीम से पैसंजर्स लाभांश भी हो रहे हैं. यदि किसी कारणवश किसी को कोई प्राब्लम है तो कम्प्लेन दर्ज करा सकते हैं.

ASTRO

चेहरे के डिंपल किसी भी व्यक्ति में आकर्षण का बड़ा केन्द्र बन जाते हैं. किसी के दोनों गाल पर डिंपल होते हैं तो किसी के एक ही गाल पर होता है. गालों के डिंपल बनने का कारण जन्म के समय शुक्र की मजबूत स्थितियों का होना है. ज्योतिष के अनुसार चेहरे के गालों पर पड़ने वाले डिंपल से भी लड़कियों और लड़कों के बारे में बहुत सी बातें जानी जा सकती हैं.

'गालों के डिंपल' बताए भविष्य



इंसते समय जिस लड़की के गालों में गूठे पड़ते हैं, उनका वैवाहिक जीवन सुखमय होता है. जिन लोगों के गालों में गूठे पड़ता है, वे अच्ययनशील, निष्कल, उदारमन, सुंदर तथा सौंदर्यप्रिय होते हैं. ज्यादा ही गंठे गालों में डिंपल बनना अशुभ माना जाता है. क्योंकि सफेद रंग के गाल अस्वस्थता का प्रतीक होते हैं. ऐसे लोग निराशावादी, आलसी, हीनभावना से ग्रस्त, अनिश्चितता की भावना से भरे होते हैं और हर कार्य को अपने ही हंग से करते हैं.



गूठे जातक के क्रोध, साहसी, युद्धप्रिय व उत्तेजित होने का संकेत देता है, साथ ही ऐसे लोगों में कई विशेषताएं होती हैं.



डिंपल शूभ फल देने वाला माना जाता है. ऐसे गालों में पड़ने वाले गूठे जातक की संतुलित मानसिकता को प्रदर्शित करते हैं.

कंगना की जिंदगी में नया मेहमान

बॉलीवुड की क्वीन कंगना रनौत की लाइफ में एक नया मेहमान आया है. दरअसल, कंगना की बहन रंगोली की बेबी ब्याय हुआ है. तो कंगना अब मौसी बन गई हैं. इस बात की जानकारी खुद रंगोली ने सोशल मीडिया पर दी है. रंगोली ने सोशल मीडिया पर बेटे की फोटो शेयर करते हुए लिखा, दोस्तों मिलिए हमारे बेटे पुष्पे राज से। बता दें कि कंगना और ऋतिक वाले विवाद के समय रंगोली ने कंगना को खूब सपोर्ट किया था। कंगना रनौत की जिंदगी में कई तूफान आए हैं, लेकिन एक चांदा आज भी उन्हें याद है। वो है उनके दादाजी का जो उन्हें उनकी जिंद के लिए लगा था। एक इंटरव्यू के दौरान कंगना ने अपने परिवार के बारे में कहा था कि उनके परिवार के लोग काफी सख्त थे, खासतौर पर कंगना के दादाजी. कंगना के दादाजी एक आईएएस ऑफिसर थे इसके बावजूद भी वो घर की आरती पर अपना शासन बनाए रखते थे.

बायोपिक से परिणीति हुई बाहर

बॉलीवुड में हमेशा से बायोपिक फिल्में बनती आई हैं और ऐसी ज्यादातर फिल्में सफल भी रही हैं. प्रियंका चोपड़ा से लेकर सोनम कपूर जैसी कई अभिनेत्रियां बायोपिक फिल्मों का हिस्सा बन चुकी हैं और अब इस फेहरिस्त में अभिनेत्री इलियाना डिक्रूज का नाम भी जुड़ गया है. दरअसल, उज्जा अहमद के जीवन पर बने वाली फिल्म पिछले कुछ महीनों से सुर्खियों में है. इस फिल्म का निर्देशन नाम शबाना के डायरेक्टर शिवम नायर कर रहे हैं. पहले खबर आ रही थी कि उज्जा के रूप में परिणीति चोपड़ा का नाम फाइनल कर दिया गया है लेकिन अब नई खबर है कि फिल्म की लीड हीरोइन के लिए शिवम ने इलियाना से संपर्क किया है. उन्हें फिल्म की कहानी पसंद है और वह उज्जा के बारे में पहले से ही बहुत कुछ जानती हैं और परदे पर उनका किरदार निभाने के लिए बेहद उत्साहित भी हैं.

नए प्रयोगों के बारे में सोच रही हूँ: अश्वनी

बरेली की बर्फी की सफलता ने अश्वनी अथर तिवारी को आश्चर्य में डाल दिया था लेकिन निर्देशक नहीं चाहती हैं कि सफलता का असर उनके काम पर पड़े. अश्वनी की पहली फिल्म नील बटे सननाटा (2016) में आई थी और दर्शकों ने इसे भी अच्छी प्रतिक्रिया दी थी. उन्होंने कबड्डी पर आधारित अपनी अगली फिल्म पर काम करना शुरू कर दिया है. निर्देशक ने अश्वनी फिल्म पर खामोशी अख्तियार की हुई है जिसका नाम अभी तय नहीं हुआ है. उन्होंने दिए साक्षात्कार में कहा कि मैंने वह कभी नहीं किया. जब नील बटे, बनी तो लोगों ने सोचा कि मैं फिर से महिलाओं पर आधारित फिल्म बनाऊंगी, लेकिन बरेली... बनाई.

महक सूंघकर अनलॉक हो जाएगा स्मार्टफोन



अभी तक हम आप अपने स्मार्टफोन को अनलॉक करने के लिए पासवर्ड या पैटर्न लॉक डालते थे और पिछले कुछ दिनों में लोग अपने फोन पर उंगली रख कर या उसे अपना चेहरा दिखा कर अनलॉक कर पा रहे हैं, लेकिन जल्दी एक ऐसी टेक्नोलॉजी स्मार्टफोन में आने वाली है जिससे आपका स्मार्टफोन आप की खुशबू सूंघकर भी अनलॉक हो जाएगा. कुछ ही वर्षों में एक ऐसी टेक्नोलॉजी स्मार्टफोस में आने वाली है जिसके बाद स्मार्टफोन सच में आपके सच्चे दोस्त कहलाएंगे क्योंकि तब वो आपके छुए या देखे बिना ही सिर्फ आपकी खुशबू से ही आप को पहचान लेंगे और अनलॉक हो जाएंगे.

वास्तुकला के लिए मोर्फोजेनेसिस का बढ़ा महत्व

भारतीय वास्तुशास्त्र में सबसे आगे होने का अनुमान 20 साल तक मानने का मोर्फोजेनेसिस सरीज प्रैक्टिकल के पहले मोनोग्राफ में विश्व स्तर पर शुरू की गई छवियां, मास्टर वास्तुकार में सुविधाओं के लिए पहले भारतीय अभ्यास के तौर पर किया गया. भारतीय परिप्रेक्ष्य में वैश्विक संदर्भ में यह बकाया मोनोग्राफ आवासीय की एक विशाल रेंज में परियोजनाओं के विषय में रोचक जानकारी उपलब्ध कराती है. जिसमें संस्थागत, व्यावसायिक, सत्कार, कार्यालयों, अंदरूनी, जनता और गुरु की योजना बनाकर तेजस्वी छवि का निर्माण कर संयोजन का ब्यापक अध्ययन को प्रेरित करती है. यह भारत की स्थापत्य जड़ों और लगातार एक अनूठा प्रासंगिक भाषा के लिए निष्क्रिय डिजाइन द्वारा तैयार किया गया है. इस पुस्तक के माध्यम से विभिन्न शिक्षण को प्रदान किया गया है. नागपुर में इफोसिस परिवार के साथ दुनिया के सबसे टिकाऊ कार्यालय की इमात बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है. जिसमें 20,000 लोगों के लिए सभी मूलभूत सुविधाओं जैसे पानी, ऊर्जा और अन्य का समावेश किया गया है. भविष्य के लिए अनुकूल बनाने के लिए स्थायी योजना बनाने में एक मॉडल के रूप में विकसित किया गया है. इस पुस्तक की मांग भारत के साथ ही देश और दुनिया में काफी बढ़ गई है.

अंतरिक्ष से नीली दिखती है धरती



अपने घर से दूर, शानदार नजारों के बीच स्पेस स्टेशन पर एक साल गुजरना कैसा लगता होगा? आपमें से कुछ लोगों के लिए ये शायद किसी सपने से कम नहीं हो. स्कॉट केली एक अंतरिक्ष यात्री हैं जो 340 दिन अंतरिक्ष में रह कर आए हैं. उन्होंने बताया कि स्पेस स्टेशन में गुजारा हर दिन उनके लिए एक याद बन कर रह गया है. केली के मुताबिक, 'अंतरिक्ष से धरती शानदार दिखती है. ज्यादातर जगहों पर ये नीली दिखती है. हम भाग्यशाली हैं कि हमें रहने के लिए ऐसा घर मिला है, लेकिन कई जगहों पर प्रदूषण देखा जा सकता है.'

कई जगहों पर वातावरण बहुत खराब हो गया है.

केली ने बताया, 'धरती को अंतरिक्ष से देखने का अनुभव आपको बदल देता है. वहां रहकर मुझे लगा कि मैं कई तरह की कठिनाईयों का सामना करने हुए भी काम कर सकता हूँ.' केली के मुताबिक, 'धरती से देखना एक अद्भुत अनुभव है. बाहर से आपको ये एक खूबसूरत और शांत जगह दिखती है. लेकिन कई बार ऐसा नहीं है. ये आपको अपने ग्रेह की स्थिति के बारे में सोचने के लिए मजबूर कर देता है, धरती के प्रति आपकी सहानुभूति बढ़ जाती है.' वहां बहुत ज्यादा काम होता है. हमें हर दिन सुबह 6 बजे उठना होता है. वहां 3 तरह के काम होते हैं - या तो कोई प्रयोग करना होता है, या फिर स्पेस स्टेशन के खराब हार्डवेयर को रिपेयरिंग करनी होती है या फिर स्पेस स्टेशन के जेनरल मेटेनेंस पर ध्यान देना होता है ताकि स्टेशन सही तरीके से काम कर सके. केली के मुताबिक 'मैं वहां एक वैज्ञानिक नहीं था, मैं एक साइटिकल सबजेक्ट था. मैं कई प्रयोगों का ऑपरेंटर रहा. मुझे लगता है कि आज से कई वर्षों बाद जब मैं पीछे मुड़कर अपने किए गए प्रयोगों को देखूंगा तो शायद ये अहसास होगा कि हम लोग कुछ ऐसा कर पाए जिसने हमें आगे बढ़ने में मदद की.'

खून को जमने से रोकता है हींग



हींग में कोउमारिन नाम का पदार्थ पाया जाता है. यह खून को जमने से रोकता है. इससे ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में मदद मिलती है. हींग में पाए जाने वाले एंटी-इन्फ्लेमेट्री तत्व पीरि से जुड़ी सभी परेशानियों से निजात दिलाने में मदद करते हैं. हींग का सेवन करने से बलगम प्राकृतिक रूप से दूर रहता है. यह एक श्वसन उत्तेजक की तरह कार्य करती है और खांसी के उपचार में मदद करती है. शहद और अदरक के साथ हींग को मिलाकर खाने से खांसी में आराम मिलता है.

'नेट' के सिलेबस में होगा संशोधन और बदलाव

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) पिछले एक दशक में पहली बार विश्वविद्यालयों व कॉलेजों में असिस्टेंट प्रोफेसर बनने और जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) की पात्रता के लिए आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) के सिलेबस में बदलाव करने जा रहा है. इसके लिए यूजीसी ने एक विशेषज्ञ समिति का गठन भी कर दिया है. यह विशेषज्ञ समिति उन सभी विषयों के सिलेबस में संशोधन और बदलाव करेगी जिसकी परीक्षा यूजीसी-नेट के तहत होती है. आयोग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि यह विशेषज्ञ समिति देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में अभी पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम के आधार पर नेट के सिलेबस में बदलाव का ड्राफ्ट तैयार करेगी, जिसे आयोग और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के पास मंजूरी के लिए भेजा जाएगा. इसके बाद यह फेसलाल लिया जाएगा कि इसे कब लागू करना है.



अब तक 25 समितियां गठित की गईं
यूजीसी-नेट की परीक्षा 90 विषयों के लिए आयोजित कराई जाती है. इन सभी विषयों के सिलेबस में बदलाव के लिए आयोग ने अभी तक 25 विशेषज्ञ समितियों का गठन किया है. आधुनिक पाठ्यक्रम के हिसाब से इन सभी 90 विषयों के सिलेबस संशोधित किए जाएंगे. आयोग के अधिकारियों का कहना है कि इस कार्य के लिए अभी और विशेषज्ञ समितियों का गठन किया जाएगा. नए सिलेबस ड्राफ्ट करने वाले पैनेल में सिर्फ उन लोगों के लगाया गया है जो शिक्षण और अनुसंधान के कार्य में लगे हुए हैं.

आउटडेटेड है नेट का सिलेबस
यूजीसी के अधिकारी ने बताया कि नेट का मौजूदा सिलेबस कम से कम 10 साल पुराना है. जबकि इस बीच अधिकतर विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में बदलाव हो चुका है. ऐसे में नेट परीक्षा पास करने वाले अभ्यर्थी जब असिस्टेंट प्रोफेसर बनकर विश्वविद्यालयों में पढ़ाने जाते हैं तो उन्हें अपडेटेड पाठ्यक्रम के मुताबिक छात्रों को पढ़ाने में परेशानी आती है. इसलिए यूजीसी नेट के सिलेबस में जरूरी बदलाव करेगा ताकि सिलेबस ज्यादा गतिशील और वर्तमान शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने में पूरी तरह सक्षम हो.

केवल 3.9 फीसदी अभ्यर्थी होते हैं पास

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नेट परीक्षा को साल में सिर्फ एक बार आयोजित कराने पर भी विचार कर रहा है. इसे आयोजित कराने वाली संस्था सीबीएसई भी इसे साल में एक बार ही कराने के पक्ष में है. इसके पीछे का एक कारण नेट परीक्षा में कम अभ्यर्थियों का उपास्थित होना बताया जा रहा है. कहा जा रहा है कि नेट परीक्षा के लिए औसतन 6.5 लाख अभ्यर्थी आवेदन करते हैं, जिनमें से औसतन 1.5 लाख अभ्यर्थी ही परीक्षा में शामिल होते हैं. सफल परीक्षार्थियों का औसत भी केवल 3.9 फीसदी ही है.

मिर्च MASALA



देखिए, अगली सूची में नाम नहीं आया तो, वैसे भी अपनी बहुत डिमांड है...!

TODAY'S रेसिपी: ग्रीन ओनियन परांठा

सामग्री: मैदा - 280 ग्राम, नमक - 3/4 छोटा चम्मच, चीनी - 1 छोटा चम्मच, गर्म पानी - 80 मिलीलीटर, शीत पानी - 70 मिलीलीटर, तेल - फ्राई करने के लिए, हरा प्याज - स्वादानुसार, तेल - ब्रश करने के लिए.

विधि: एक बाउल में 280 ग्राम मैदा, 3/4 छोटा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच चीनी, 80 मिलीलीटर गर्म पानी डालकर अच्छी तरह से मिलाएं. इसमें 70 मिलीलीटर ठंडा पानी डालकर नरम आटे की तरह गुंथ लें. इसे 20 मिनट के लिए रख दें. अब आटे को बराबर भागों में विभाजित करके उन्हें गेंद की तरह रोल करें. इस पर थोड़ा सा सूखा आटा लगाकर बेलन की सहायता से रोटी की तरह बेल लें. इस पर हरा प्याज छिड़के और गोल-गोल रोल कर लें. फिर इसे दबाकर दोबारा बेलन की सहायता से परांठे की तरह बेलें. मध्यम आंच पर एक पैन रखें और उसमें ब्रश की सहायता से थोड़ा सा तेल लगाकर गर्म करें. इसके बाद इस पर परांठा रखकर 3 मिनट तक पकाएं. फिर इसे पलटकर दूसरी तरफ से पकाएं. अब परांठे के दोनों तरफ तेल लगाकर अच्छे से सेंक लें या जब तक यह सुनहरा भूरा नहीं हो जाता. ग्रीन ओनियन परांठा तैयार है. इसे हरे प्याज के साथ गार्निश करके सर्व करें.

टसोई TIPS

पनीर के टुकड़ों को ग्रेवी में डालने से पहले उन्हें हल्के गरम पानी में नमक डालकर रखें. फिर ये टुकड़े ग्रेवी में डालें. पनीर के टुकड़े सॉफ्ट बने रहेंगे.